# रैदास के पद (अतिरिक्त अध्ययन सामग्री)

## निर्देश : निम्नलिखित प्रश्न केवल अध्ययन हेतु हैं| इन प्रश्नों को उत्तर पुस्तिका में नहीं लिखना है|

प्रश्न: रैदास को किसके नाम की रट लगी है? वह उस आदत को क्यों नहीं छोड़ पा रहे हैं?

**उत्तर:** रैदास को राम के नाम की रट लगी है। वह इस आदत को इसलिए नहीं छोड़ पा रहे हैं, क्योंकि वे अपने आराध्य प्रभु के साथ मिलकर उसी तरह एकाकार हो गए हैं; जैसे: चंदन और पानी मिलकर एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं।

प्रश्न: 'जाकी अंग-अंग वास समानी' में 'जाकी' किसके लिए प्रयुक्त है? इससे कवि को क्या अभिप्राय है?

**उत्तर:** 'जाकी अंग-अंग वास समानी' में 'जाकी' शब्द चंदन के लिए प्रयुक्त है। इससे कवि का अभिप्राय है जिस प्रकार चंदन में पानी मिलाने पर इसकी महक फैल जाती है, उसी प्रकार प्रभु की भक्ति का आनंद कवि के अंग-अंग में समाया हुआ है।

प्रश्न: 'तुम घन बन हम मोरा' – ऐसी कवि ने क्यों कहा है?

**उत्तर:** रैदास अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं, जिन्हें अपने आराध्य को देखने से असीम खुशी मिलती है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि जिस प्रकार वन में रहने वाला मोर आसमान में घिरे बादलों को देख प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि भी अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है।

प्रश्न: 'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने क्या कहना चाहा है?

**उत्तर:** 'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने यह कहना चाहा है कि जिस प्रकार रात भर चाँद को देखने के बाद भी चकोर के नेत्र अतृप्त रह जाते हैं, उसी प्रकार कवि रैदास के नैन भी निरंतर प्रभु को देखने के बाद भी प्यासे रह जाते हैं। भक्त भी प्रतिक्षण अपने आराध्य के दर्शन करना चाहता है|

प्रश्न: रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' को प्रतिपाद्य लिखिए।

**उत्तर:** रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' में अपने आराध्य के नाम की रट की आदत न छोड़ पाने के माध्यम से कवि ने अपनी अटूट एवं अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है। इसके अलावा उसने चंदन – पानी, दीपक – बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

प्रश्न: रैदास ने अपने 'लाल' की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

**उत्तर:** रैदास ने अपने 'लाल' की विशेषता बताते हुए उन्हें गरीब नवाजु दीन-दयालु और गरीबों का उद्धारक बताया है। कवि के लाल नीची जातिवालों पर कृपाकर उन्हें ऊँचा स्थान देते हैं तथा अछूत समझे जाने वालों का उद्धार करते हैं।

प्रश्न: कवि रैदास ने किन-किन संतों का उल्लेख अपने काव्य में किया है और क्यों?

**उत्तर:** कवि रैदास ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैन का उल्लेख अपने काव्य में किया है। इसके उल्लेख के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि उसके प्रभु गरीबों के उद्धारक हैं। उन्होंने गरीबों और कमज़ोर लोगों पर कृपा करके समाज में ऊँचा स्थान दिलाया है।

प्रश्न: कवि ने गरीब निवाजु किसे कहा है और क्यों ?

**उत्तर:** कवि ने 'गरीब निवाजु' अपने आराध्य प्रभु को कहा है, क्योंकि उन्होंने गरीबों और कमज़ोर समझे जानेवाले और अछूत कहलाने वालों का उद्धार किया है। इससे इन लोगों को समाज में मान-सम्मान और ऊँचा स्थान मिल सकी है।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर:**

प्रश्न: पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि रैदास की उनके प्रभु के साथ अटूट संबंध हैं।

**उत्तर:** पठित पद से ज्ञात होता है कि रैदास को अपने प्रभु के नाम की रट लग गई है जो अब छूट नहीं सकती है। इसके अलावा कवि ने अपने प्रभु को चंदन, बादल, चाँद, मोती और सोने के समान बताते हुए स्वयं को पानी, मोर, चकोर धाग और सुहागे के समान बताया है। इन रूपों में वह अपने प्रभु के साथ एकाकार हो गया है। इसके साथ कवि रैदास अपने प्रभु को स्वामी मानकर उनकी भक्ति करते हैं। इस तरह उनका अपने प्रभु के साथ अटूट संबंध है।

प्रश्न: कवि रैदास ने 'हरिजीउ' किसे कहा है? काव्यांश के आधार पर 'हरिजीउ' की विशेषताएँ लिखिए।

**उत्तर:** कवि रैदास ने 'हरिजीउ' कहकर अपने आराध्य प्रभु को संबोधित किया है। कवि का मानना है कि उनके हरिजीउ के अतिरिक्त अन्य कोई भी समाज के कमजोर और निम्न समझे जाने वाले व्यक्ति पर कृपा, स्नेह और प्यार कर ही नहीं सकता है। ऐसी कृपा करने वाला कोई और नहीं हो सकता। समाज के अछूत समझे जाने वाले, नीच कहलाने वालों को ऊँचा स्थान और मान-सम्मान दिलाने का काम कवि के 'हरिजीउ' ही कर सकते हैं। उसके 'हरजीउ' की कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं।